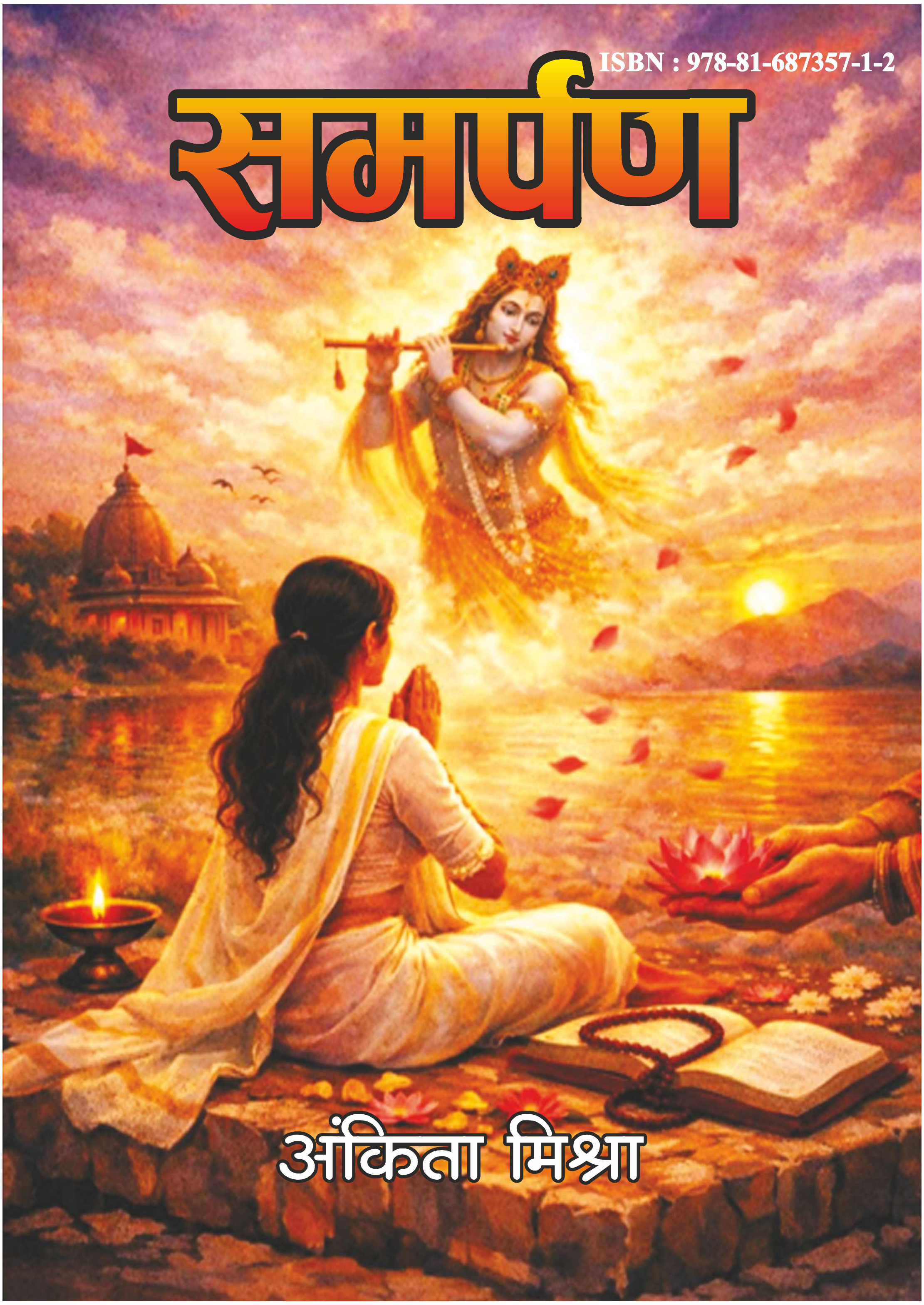
ISBN : 978-81-687357-1-2
समर्पण
अंकिता मिश्रा

समर्पण

लेखक

अंकिता मिश्रा
छपरा, सारण, बिहार, भारत

Publisher :
Aditi Publication, Raipur, Chhattisgarh, India
Ph.: +91 9425210308

समर्पण

Year: **2026**
Edition - **01**

लेखक
अंकिता मिश्रा
छपरा, सारण, बिहार, भारत

ISBN : **978-81-687357-1-2**

Copyright© All Rights Reserved to Author
No parts of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of original Author.

Price : Rs. **150/-**

Publisher & Printer:
Aditi Publication,
Opp. New Panchajanya Vidya Mandir, Near Tiranga Chowk,
Kushalpur, Raipur, Chhattisgarh, INDIA
+91 9425210308

आशीर्वचन

प्रस्तुत पुस्तक जो हृदय की गहराई से निकली हुई भावनाओं का कविता के रूप में समर्पित है, वह मेरी प्रिय छात्रा अंकित मिश्रा की भावनाओं की अभिव्यक्ति हैं। काव्य–संग्रह ''समर्पण'' अपने नाम के अनुरूप ही आत्मा की गहराइयों से निकला हुआ एक भावनात्मक प्रवाह है। यह केवल कविताओं का संकलन नहीं, बल्कि जीवन की विविध अनुभूतियों का कलात्मक रूपांतरण है। इसमें प्रेम की कोमलता है, विरह की वेदना है, भक्ति की गहराई है और आत्मस्वीकृति की सहजता भी। कवयित्री अंकिता मिश्रा ने अपनी रचनाओं में जिस भावभूमि को स्पर्श किया है, वह पाठक को भीतर तक आंदोलित करती है। उनकी कविताएँ केवल पढ़ी नहीं जाती, बल्कि अनुभव की जाती है। जब वह लिखती हैं–

''मेरी ऑखों से छलकते अश्क तुम,
मेरे अधर पे आई बेवजह मुस्कान तुम।''

तो यह पंक्तियॉ व्यक्तिगत वेदना से ऊपर उठकर सार्वभौमिक भावनाओं का रूप ले लेती हैं।

इसी प्रकार उनकी भक्ति–प्रधान कविताओं में आत्मा और ईश्वर के बीच का अद्वितीय संबंध झलकता है। जब वह कहती हैं–

''मेरी मुस्कान तुझसे, मेरी पहचान तुझसे,
जो चल रही सांस बन कर वो जीवन प्राण तुझसे।''

तो यह केवल कवयित्री का निजी अनुभव नहीं, बल्कि हर उस

साधक की पुकार है जो अपने जीवन को ईश्वर के समर्पण में देखता है। ''समर्पण'' की कविताएँ भावनात्मक और कलात्मक दोनों स्तरों पर पाठक को शांति प्रदान करती हैं। इनमें भाशा का सौंदर्य है, अलंकारों की मधुरता है और भावों की गहराई है।

यह संग्रह साहित्यिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें आधुनिक संवेदनाओं के साथ–साथ भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की जड़ें भी दिखाई देती हैं। कवयित्री ने अपने जीवन के अनुभवों को सहजता से शब्दों में ढ़ाला है। कभी ये कविताएँ आत्मिक साध ाना का रूप लेती हैं, कभी प्रेम की कोमलता का और कभी विरह की वेदना का। यही बहुरंगी भाव इस को विशिष्ट बनाते हैं।

इस प्रकार ''समर्पण'' केवल कवयित्री की आत्मा की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि जीवन के विविध रंगों का साहित्यिक उत्सव है। यह संग्रह पाठकों को भावनात्मक शांति और कलात्मक आनंद दोनों प्रदान करेगा।

स्नेह और आशीर्वाद सहित

–प्रो. (डॉ.) अमरनाथ प्रसाद
अंग्रेजी विभागाध्यक्ष,
जयप्रकाश विश्वविद्यालय,
छपरा, बिहार।

प्रस्तावना

कविता का यह संग्रह ''समर्पण'' मेरे जीवन की भावनाओं, अनुभवों और आत्मिक यात्रा का सजीव प्रतिबिंब है। जब मन में उमड़ते विचार शब्दों का रूप लेते हैं, तो वे केवल पंक्तियॉ नहीं रहते, बल्कि आत्मा की धड़कन बन जाते हैं। इस संग्रह की हर कविता मेरे ह्रदय की गहराईयों से निकली हुई एक पुकार हैं। कभी प्रेम की, कभी विरह की, कभी भक्ति की और कभी आत्म–स्वीकृति की। जैसा कि मैंने लिखा हैं।

''तू है तो मैं हूँ, तू है तो मैं हूँ,
मेरी मुस्कान तुझसे, मेरी पहचान तुझसे।''

इन पंक्तियों में मेरे जीवन का सार छिपा है। यह संग्रह मेरे लिए केवल कविताओं का संकलन नहीं, बल्कि आत्मा का दर्पण हैं। इसमें प्रेम है, पीड़ा हैं, भक्ति हैं और जीवन के प्रति गहरी आस्था भी। कभी यह भाव मीरा की भक्ति की तरह उमड़ते हैं, कभी कबीर की सहजता की तरह सरल हो जाते हैं और कभी आधुनिक संवेदनाओं की तरह ताजगी लिए सामने आते हैं। इसीलिए ''समर्पण'' मेरे लिए साधना भी है और जीवन का उत्सव भी। जैसा कि मैंने अपनी कविताओं में कहा हैं।

''मेरे लिए तो मेरी सांस भी तुम, मेरी आस भी तुम।
तुम जिंदगी, तुम बंदगी, तुम ही जमीन आसमान भी तुम।''

इस पंक्तियों में मेरी आत्मा की पुकार है, जो हर पल अपने प्रियतम, अपने ईश्वर और अपने गुरू से जुड़ती है।

इस काव्य–संग्रह को मैं सर्व प्रथम अपने गुरूवर को समर्पित करती हूँ, जिनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन ने मेरी लेखनी को दिशा दी। उनके आर्शीवाद के बिना यह संभव न था। मैं अपने आदरणीय शिक्षा गुरू, प्रोफेसर (डॉ.) अमरनाथ प्रसाद जी के प्रति अंतःकरण से कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। उनके स्नेहिल मार्गदर्शन और निरंतर सहयोग के बिना मेरी यह साहित्यिक यात्रा कभी पूर्णता तक नहीं पहुँच पाती। वे मेरे लिए केवल गुरू ही नहीं, बल्कि प्रेरणा के स्त्रोत और जीवन–पथ के आलोक स्तंभ हैं। मैं अपने माता–पिता के प्रति हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे जीवन का संस्कार और संवेदनशीलता दी। उनके स्नेह और त्याग ने ही मुझे शब्दों का मूल्य समझाया। मेरे पति के सहयोग और प्रेम के बिना यह यात्रा अधूरी रहती। उनके विश्वास ने ही मुझे लेखन के लिए साहस दिया। मैं अपने प्रिय पुत्र अर्णव को हृदय से आशीर्वाद देती हूँ जिसके स्नेह और मासूम मुस्कान ने मेरी कविताओं में जीवन का रस घोला। साथ ही, मैं अपने सभी आत्मीय जनों का भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके प्रेम और प्रोत्साहन ने मुझे निरंतर आगे बढ़ने की शक्ति दी।

निर्जला एकादशी, 2026 **अंकिता मिश्रा**

अनुक्रमणिका

S. No.	Particular	Page
01.	सोचती हूँ की क्या नाम दूँ?	01
02.	वो पल	02
03.	बस आप	04
04.	मेरी पहचान	05
05.	तु है तो मैं हूँ	06
06.	स्वामी जी	07
07.	शब्दों के मोती	08
08.	कृपा	09
09.	क्याँ करूँ	10
10.	जीवन	11
11.	ममता	12
12.	याद है मुझे	13
13.	सुनते हो मेरी सदा	14
14.	याद	15
15.	एक कहानी	16
16.	तुम ही तो हो	18

17.	मेरे सरकार	19
18.	प्रेम	20
19.	दुनिया मेरी	22
20.	तू संभालेगा	23
21.	तू ही प्रेरणा मेरी	24
22.	क्या जाने कोई	25
23.	बस आप	26
24.	हरिद्वार	27
25.	चारो धाम	28
26.	गुरूः मेरे जीवन का अर्थ	29
27.	तू याद आता है	31
28.	सीख	32

अंकिता मिश्रा

अंकिता मिश्रा बिहार के सारण (छपरा) की मूल निवासी हैं। उनका जन्म १८ जुलाई १९९४ को छपरा में हुआ। उन्होंने वर्ष २०१८ में अंग्रेजी से स्नातकोत्तर (एम.ए.) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। वर्त्तमान में वे अंग्रेजी साहित्य की शोधार्थी हैं तथा उनका शोध-विषय है, Spiritual and Literary Perspectives in the Poetry of Kabir Das and Swami Vivekananda: A Comparative Study." यद्यपि उनका अध्ययन-क्षेत्र अंग्रेजी साहित्य हैं, फिर भी हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति उनका विशेष अनुराग रहा है। हिंदी की सहजता, संवेदनशीलता और आत्मीय अभिव्यक्ति ने उन्हें सदैव आकर्षित किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने अपनी भावनाओं और विचारों को हिंदी काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया। उनकी कुछ रचनाएँ विभिन्न साहित्यिक संकलनों एवं शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।

प्रस्तुत काव्य-संग्रह उनकी साहित्यिक यात्रा का प्रथम प्रयास है, जिसमें जीवन, प्रेम, आस्था, मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक सरोकारों से जुड़े भावों को सरल एवं हृदयस्पर्शी शब्दों में व्यक्त किया गया हैं।

Aditi Publication

Aditi Publication

Opp. New Panchjanya Vidya Mandir, Near Tiranga Chowk,
Kushalpur, Dist.- Raipur-492001, Chhattisgarh
shodhsamagam1@gmail.com, +91 94252 10308

ISBN : 978-81-687357-1-2

9 788168 735712

₹ 150